भूमिका

साहित्य मानव मन की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। मनुष्य अपने आस-पास घटित हो रही घटनाओं तथा अपने मन-मस्तिष्क में चल रहे विचारों, भावों और कल्पनाओं आदि को साहित्य के ही माध्यम से समाज के सम्मुख प्रकट करता रहा है। विषय तथा स्वरूप की भिन्नता के कारण साहित्य को अनेक विधाओं में बांटा गया है जिनमें यात्रा साहित्य एक प्रमुख और महत्त्वपूर्ण विधा है। हिंदी में यात्रा साहित्य विधा अत्यंत समृद्ध है। यात्राएं मनुष्य को साहसी बनाती हैं। उसके ज्ञान तथा अनुभव संसार को व्यापक बनाती हैं। उसके सामाजिक दायरे को विस्तृत करती हैं। यात्री, यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभूतियों को जब अपनी संवेदना से संपृक्त करके, लिखित रूप में अभिव्यक्त करता है तो यात्रा साहित्य का निर्माण होता है। वैसे तो कोई भी यात्री अपनी यात्रा का विवरण लिख सकता है परंतु सभी यात्रा-विवरण यात्रा साहित्य अथवा यात्रा वृत्तान्त नहीं कहे जा सकते हैं। यात्रा विवरण लिखने के लिए कोई कलात्मक दृष्टि या संवेदना अथवा किसी अन्य प्रकार की साहित्यिक मनोवृत्ति की आवश्यकता नहीं होती है। यह किसी पर्यटक की यात्रा का इतिवृत्त मात्र होता है जबकि यात्रा साहित्य में लेखक की विशिष्ट दृष्टि एवं संवेदना के स्पर्श से यात्रा के अविस्मरणीय क्षणों, अनुभूत दृश्यों, स्थानों, वस्तुओं, व्यक्तियों, भावों आदि का सरस और बिम्बग्राही भाषा में पाठकों के समक्ष पुनः सजीव रूप में प्रस्तुति की जाती है। इसमें स्थान विशेष के समग्र वैभव को पूर्ण कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है।

यात्रा वृत्तान्त हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है परंतु यह दुर्भाग्य की बात है कि इस विधा की गणना साहित्य की अन्य विधाओं में करके इसे उपेक्षित सा महसूस कराया जाता है। स्वयं भी घुमक्कड़ प्रवृत्ति की होने तथा यात्रा साहित्य पढ़ने में रुचि के कारण मैंने यात्रा साहित्य में ही शोध कार्य करने का निश्चय किया था। इसलिए मैंने अनेक यात्रा-वृत्तान्त पढ़े और इसी क्रम में मुझे 'वह भी कोई देस है महराज' पुस्तक पढ़ने को मिली। इसे पढ़कर मुझे भारत देश के विविधता से भरे सतरंगी,

और एक बहुत महत्त्वपूर्ण भूभाग की संस्कृति, समाज आदि से परिचित होने का अवसर मिला तथा इस विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा हुई। इसलिए मैंने अपने शोध कार्य के लिए 'वह भी कोई देस है महराज' में "पूर्वोत्तर का सामाजिक यथार्थ" विषय का चयन किया। यह विषय सर्वथा नवीन और मौलिक है। इस विषय पर मेरी जानकारी में कहीं पर भी कार्य नहीं हुआ है।

अध्ययन की सुविधा और शोध कार्य की आवश्यकता के अनुसार लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों मे विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय 'हिंदी साहित्य में यात्रा वृत्तांत' है। इस अध्याय को पुनः दो उप अध्यायों में बांटा गया है। प्रथम उप-अध्याय 'यात्रा-साहित्य : अर्थ, स्वरूप एवं प्रकृति' है। इस उप अध्याय में यात्रा, यात्रा वृत्तान्तों का तात्पर्य, यात्रा वृत्तों के स्वरूप, आशय, प्रकृति और उसकी भिन्न-भिन्न विशेषताओं को समझने का प्रयास किया गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'हिंदी यात्रा साहित्य का इतिहास और विकास' है। इस उप-अध्याय में हिंदी साहित्य में यात्रा साहित्य का उद्भव कैसे हुआ? उसकी विकास यात्रा के क्या-क्या पड़ाव रहे ? समय के भिन्न-भिन्न दौर में लेखकों द्वारा किस प्रकार के यात्रा वृत्त लिखे जाने की प्रवृत्ति रही अथवा यात्रा वृत्तों के स्वरूप में समय के बदलाव के साथ-साथ क्या कुछ परिवर्तन आए आदि बातों को जानने का प्रयास किया गया है।

लघु शोध प्रबंध का **द्वितीय अध्याय** 'पूर्वोत्तर के राज्यों का भौगोलिक परिवेश एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ' है । इस अध्याय में पूर्वोत्तर भारत के विविध राज्यों की भौगोलिक स्थिति और विशेषताओं को जानने के साथ-साथ इन राज्यों की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधताओं और विशिष्टताओं को समझने के लिए उनका संक्षिप्त विवेचन किया गया है । पूर्वोत्तर प्रांत के सभी राज्य संस्कृति दृष्टि से अति समृद्ध हैं । वहाँ जो परम्पराएँ, लोक-विश्वास, मान्यताएँ, रीति-रिवाज़, उत्सव-त्यौहार, पहनावा, भाषाएँ, रहन-सहन के ढंग प्रचलित हैं, वे शेष भारत

से बहुत भिन्नता लिए हुए है और भारत में अधिकांश लोगों के लिए अपरिचित हैं। इसीलिए पूर्वोत्तर भारत के इन राज्यों की के सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक गठन को व्यापक रूप से समझने और उनकी अनन्य विशेषताओं को जानने का प्रयास इस अध्याय के द्वारा किया गया है।

लघु शोध प्रबंध का **तृतीय अध्याय** 'पूर्वोत्तर का सामाजिक यथार्थ' है। इस अध्याय में शोध कार्य की आधार पुस्तक 'वह भी कोई देस है महराज' का आलोचनात्मक विश्लेषण उसमें वर्णित पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों के सामाजिक यथार्थ से संबन्धित विभिन्न घटनाओं, तथ्यों, के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत पूर्वोत्तर भारत के राज्यों की जमीनी हक़ीकत को तो बयान करता ही है ,साथ ही वहाँ के सामान्य जन-जीवन का आँखों-देखा हाल भी प्रस्तुत करता है। अतः पुस्तक के द्वारा पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों के सामाजिक जीवन के संदर्भ में प्राप्त होने वाले विविध तथ्यों, घटनाओं, लेखक के अवलोकन आदि का विवेचन किया गया है।

लघु शोध प्रबंध का **चतुर्थ अध्याय** 'शिल्पगत अध्ययन' है। इस अध्याय में विवेच्य कृति के शिल्प पक्ष का भाषा-शैलीगत अध्ययन किया गया है। शिल्प पक्ष इस पुस्तक का महत्त्वपूर्ण और मजबूत पहलू है। वैसे भी किसी भी यात्रा वृत्तांत में भाषा का तत्त्व बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। लेखक ने स्थूल वर्णनों में भी सरस और कसी हुई भाषा का प्रयोग किया है जो इस पुस्तक के शिल्प में एक नवीनता और ताजगी का बोध भर देते हैं।

अंत में, **उपसंहार** में सभी अध्यायों का मूल्यांकन किया गया है।

किसी भी कार्य के पूर्ण होने में एक प्रेरणा, सहयोग, उचित दिशा-निर्देश और आशीर्वाद की आवश्यकता होती है। मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के पूर्ण होने में भी मेरे गुरुजनों, परिजनों और शुभेच्छु मित्रों का बहुत योगदान रहा है। इस क्रम में मैं सर्वप्रथम साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता और हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष और मेरे शोध-निर्देशक प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह जी

की बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे उक्त विषय पर शोध पर कार्य करने का अवसर प्रदान किया। सर ने शोध कार्य के लिए विषय के चयन की पूर्ण स्वतन्त्रता मुझे दी जिसके कारण मैं अपने इच्छित विषय पर शोध कार्य कर सकी। सर ने शोध कार्य के दौरान मेरे समक्ष आने वाली समस्याओं का समाधान किया और उचित रीति से कार्य करने के लिए निरंतर अपना मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करते रहे और मेरे द्वारा की जा रही त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित कराके शोध कार्य को त्रुटिहीन और गुणवत्तापूर्ण बनाने में मेरी सहायता की । सर ने अपनी अनेक व्यस्तताओं के मध्य भी समय निकालकर मुझे अपने अमूल्य सुझाव दिए जिससे कि यह लघु शोध-प्रबंध अपना मुकम्मल स्वरूप प्राप्त कर सका है। उन्हीं की उत्तम प्रेरणा और कृपा का परिणाम है कि मैं यह लघु शोध-प्रबंध पूरा कर सकी। सर की अमूल्य प्रेरणा, सहयोग और स्नेह-सिक्त मार्गदर्शन और आशीर्वाद के लिए मैं सर की हृदय से आभारी हूँ , केवल शब्दों के द्वारा सर का आभार प्रकट करना महज एक औपचारिकता भर है।

विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष और कुलानुशासक प्रो॰ सूरज पालीवाल जी की भी मैं बहुत आभारी हूँ जिनका आशीर्वाद, सहयोग और मार्गदर्शन मुझे समय-समय पर मिलता रहा है। साथ ही विभाग के अन्य सभी गुरुजनों के प्रति भी मैं बहुत कृतज्ञ हूँ जिनका अपेक्षित सहयोग, सुझाव और आशीर्वाद मुझे बराबर मिलता रहा है।

मैं अपने सभी परिजनों की भी बहुत-बहुत आभारी हूँ। मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के पूरा होने में मेरे परिजनों की भी बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । मेरे परिजनों के मुझ पर भरोसे ने कठिन परिस्थितियों में भी निरंतर मेरा आत्मविश्वास बनाए रखा। मेरे पास भौतिक रूप से उपस्थित न रहकर भी वे मेरे द्वारा किए जा रहे शोध-कार्य की प्रगति को बराबर जाँचते रहे और मेरा उत्साह बढ़ाते रहे। इसके लिए मैं विशेष रूप से अपने अनिल चाचाजी की बहुत आभारी हूँ। मेरे परिजनों के आशीर्वाद और सहयोग का ही परिणाम है कि घर से दूर रहकर भी आज मैं यह शोध-कार्य पूर्ण कर सकी। इसके

लिए मैं अपने दादा-दादी, माता-पिता, दोनों चाचा और चाची, बुआ, दीदी, बहन और अपने भाइयों से मिले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग, प्रेरणा और प्रोत्साहन के लिए उनके प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ।

मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के समय से पूरा होने में मेरे मित्रों का भी बहुत योगदान रहा है। मेरी बहन और दोस्त विभा मलिक, सुअम्बदा कुमारी, स्वाति, प्रतिष्ठा मिश्रा, मेहराज अली और आशीष कुमार की मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। सम्पूर्ण शोध-कार्य के दौरान मुझे मेरे मित्रों का सहयोग तथा स्नेह और शुभकामनाएँ निरंतर मिलतीं रहीं हैं। अपने-अपने शोधकार्यों में व्यस्त होने के बावजूद उन्होंने मेरे शोध-कार्य से संबन्धित शंकाओं का समाधान किया, सामग्री-संकलन में सहायता की और अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए और मुझे लगातार शोधकार्य के लिए प्रोत्साहित किया। अपने मित्रों के योगदान के लिए मैं हृदय से बहुत आभार प्रकट करती हूँ।

साथ ही मैं केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र से निकलने वाली पत्रिका 'समन्वय पूर्वोत्तर' के संपादक श्री विद्या शंकर शुक्ल जी के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे शोध-कार्य से संबन्धित आवश्यक सामग्री प्राप्त करने में अपना अमूल्य सहयोग दिया। शुक्ल जी की मैं विशेष रूप से बहुत आभारी हूँ।

मैं अपने इस लघु शोध-प्रबंध को अपने मार्गदर्शक गुरु प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह और अपने परिजनों को समर्पित करती हूँ जिनकी प्रेरणा से मैं इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में सफल हो सकी हूँ। यदि लघु इस शोध-प्रबंध में कोई त्रुटि रह गई हो तो मैं इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

- आभा मलिक